632
H

1208
10/21

191

891.431
R185

(632) 486

वन्दे मातरम् ।

राष्ट्रीय वीणा ।

प्र०-प्रभुनारायन मिश्र बुक्सेलर,

इस्टेशन रोड़ गया धाम । मू०-)

IMPERIAL RECORD
RECEIVED
8 - AUG. 1931
DEPARTMENT

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 632
Date 15.12.71
GOVT. OF INDIA

बन्देमातरम् ।

राष्ट्रीय बीणा ।

गजल ।

देश रक्षा के लिये जान का जाना अच्छा ।
नाम बदनाम जो हो जहरका खाना अच्छा ॥
किस लिये देश बहा जाता है मंझधार में ।
डूब जाए न कहीं इसका बचाना अच्छा ॥
देश संकट में पड़ा है न करो देर उठो ।
बुजदिली छोड़ के मैदान में आना अच्छा ॥
देशकी हालते अबतर पै जरा गौर करो ।
आबरू जाती है धब्बे का मिटाना पच्छा ॥
मर्द कहलाते हैं आगे बढ़ो औरत न बनो ।
कुछ तो शर्माओ नहीं नाम घटाना अच्छा ॥
मर मिटो जानसे हिम्मत जरा हिम्मत बाधो ।
काहिली छोड़ के कुछ करके दिखाना अच्छा॥

कौवाली ॥ १ ॥

भारत क्यों करते बरबाद ताड़ी शराब पीने वाले। मुश्किल से जो दाम कमाते, उसको क्यों बेकार उड़ाते। क्यों नहिं बाल बच्चोमें खाते, ताड़ी शराब पीने वाले ॥ १ ॥ इसी पैसेके कारन यार बनो दुसरोंका ताबेदार। जरा दिलमें तो करो बिचार ताड़ी शराब पीने वाले ॥ २ ॥ बुरी सै ताड़ी और शराब, नसे में सूझे कर्म खराब। बको गाली नहिं सर्म हेजाव, ताड़ी शराब पीने वाले ॥ ३ ॥ सरे में मारकंडे ललकार, कहें मानो जी बात हमार। जरा भारत तो लेउ उबार, ताड़ी शराब पीनेवाले॥४

॥ गजल ॥

भारत में डंका आजादी बजवा दिया गान्धी बाबा ने। सत्याग्रह झण्डा दुनियां में फहरा दिया गान्धी बाबा ने ॥ १ ॥ सर पर गठरी थी गुलामी की अति दूर थी हम से

आजादी । बनकर प्रहलाद हमें सत्पथ दिखला दिया गाधी बाबाने ॥ २ ॥ घुस गये बिदेशी घर में थे सब माल लूट कर ले जाते । सद सुक्र हाथ सोतोंका पकड़ बिठला दिया गान्धी बाबाने ॥ ३ ॥ सत्तर करोड़ धन जाता था प्रति वर्ष बिदेशी कपड़ोंसे तब मंत्र बिदेशी बहिष्कार सिखला दिया गान्धी बाबा ने ॥ ४ ॥ दे ज्ञान हमें चर्खे का पुनि खद्दरका बाना पहना कर । दिल गोरे चमड़े वालों का दहला दिया गान्धी बाबा ने ॥ ५ ॥ निश्चयहि दिवाला निकलेगा मेन्चिस्टर लंका शाय का । गर उस पथपर हम चल सभी जो बता दिया गान्धी बाबाने ॥ ६ ॥ टूटा कानून नमक का ज्यों योंहीं प्रसिद्ध सब टूटैं गे । है भद्र अवज्ञा का पथ अब दर्शादिया गान्धी बाबा ने ॥ ७ ॥ सत्या ग्रह करके नवयुबको भारत मां को आजाद करो । बस यही बिजय का मार्ग हमें बतला दिया गान्धी बाबा ने ॥ ८ ॥

गजल ।

गान्धी बाबा ने फिरसे उजाला कर दिया ।
छोटी हस्ती ने कैसा बोला वाला कर दिया ॥
झन्डा गाड़ आजादी बना मैदान में ।
दिल हिलाया है उनका यक तान में ॥
एक चर्खे से फैसन का दिवाला कर दिया ॥
लगे खद्दर पहिनने बड़े से बड़े ।
जो थे फैसन परस्ती के पीछे पड़े ॥
कौमी गाने ने सबको मस्ताना कर दिया ॥
जारी सत्याग्रह अब है जाकर क्या ।
अपने हाथों नमक कर पै कब्जाकर लिया ॥
राग अब तो किसीका तीताला कर दिया ।
देखिये रंग लायेगी दुनियां ये क्या ॥
क्या २ करता ज़ुलुम दुशासन भला ।
गौरी नाथ ने ढंग निराला करदिया ॥

गाना ।

छोड़ो न तुम धरमको चाहे जान तनसे निकले।

हो सत्य बात लेकिन मीठे बचन से निकले ॥
अग्नि का धर्म जब तक रहता उसमें कायम ।
नहिं सिंहकी ह शक्तिजो वास उसके निकले ॥
फिर अपना धर्म तजकर जब राख वह होजावे ।
चीटी भी उसके ऊपर बेखौफ बनके निकले ॥
हैं धर्मकी यह महिमा यदि इसको धारलो तुम ।
शेरे बबर मानिन्द शक्ति बदन से निकले ॥
एक धर्म काम आता कोई न संग जाता ।
सिकन्दरके हाथ दोनों खाली कफनसे निकले ॥

भारत दशा ।

बतला दे बड़े भारत अब क्या है हाल तेरा ।
क्यों हो रहा है ऐसा चेहरा निढाल तेरा ॥
मुद्दत तलक रहा तूं महबुब रूप आलम ।
या दिल फरेब बेहद हुसनो जमाल तेरा ॥
दुनियां में कौन सा है, मशहूर मुल्क ऐसा ।
जाता जहां नहीं था लद लद के माल तेरा ॥
जिसकी वजहसे था तूं मशहूर कुल जहां में ।

किसने मिटा दिया वह कसवों कमाल तेरा ॥
हालत को देख तेरी छाती फटी है मेरी ।
दिल को दुखा रहा है रंजो मलाल तेरा ॥
सन्तान तेरी जब तक होगी न तेरी रक्षक ।
सालिंग न दुर होगा हरगिज जवाल तेरा ॥

हमारी प्रतिज्ञा ।

संसारको देंगे दिखा हम देस पर कुरबान है ।
परवा नहीं कुछ भी हमें हम देस पर कुरबान है
बलिदान होता मैंने सीखा हैं पङ्गों से आहो ।
चिन्ता नहीं होवे भसम हम देसपर कुरबान है॥
लड़ना पड़े यहीकालसे भी देस भारतके लिये ।
तो जित लेंगे उसको भी हम देशपर कुरबान है॥
लाखो सहे हम आपदपर मुख न मोड़ेगे कभी ।
पिस२ के चटनी होयेंगे हम देशपर कुरबानहै॥
इस देस भारत के लिये जेल में जाना पड़े ।
साबित वहां भी हम करेंगे देस पर कुरबान है॥
तोपोंकी तीक्षण बाणसे भयखा नहीं सकतेनहीं ।

हम रोक देंगे सीना अपना देशपर कुरबान है॥
स्वाधीन्ता के पक्ष मे हम प्राण देगें हे प्रभो।
हंसते हुए हम जेल भरेगें देस पर कुरबान है॥

॥ गजल ॥

सितमगर की हस्ती मिटानी पड़ेगी।
हमें अपनी करके दिखानी पड़ेगीं॥
कभी उफ् न लायेगें अपनी जुबां पर।
मुसीबत सभी कुछ उठानी पड़ेगी॥
बहुतहो चुका अब सहें हम कहां तक।
ये बेइमानी सारी हटानी पड़ेगी॥
बिदेशी बसन औ नशे की जिनिस पर।
हमें अब पिकैटिंग करानी पड़ेगी॥
नमक को बनाकर औ कर बंद करके।
आजादी की झंडी उड़ानी पड़ेगी॥
करेंगे हम आजाद भारत को अपने।
बिदेशी हुकूमत मिटानी पड़ेगी॥

स्वतन्त्र भारत ।

अहाहा मोहन के मुखसे निकला स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत । सचेत होकर सुना सभी ने स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत ॥ हर एक घर में मची हुई है स्वतन्त्रताको बिचित्र हलचल । हर एक बच्चा पुकारताहै स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत बनाके कुटिया स्वतन्त्रताकी सपूत जेलों में रम रहे हैं । निकल के देखेंगे वो तपस्वी स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत ॥ कुमारि हिमगिरी अटक कटक में बजेगा डंका स्वतंत्रता का । कहेंगे तैंतिस करोड़ मिलकर स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत ॥

गाना ।

जिधर देखता हूँ उधर तूंही तूं है ।
कि हरशय में जलवा तेरा हूबहू है ॥
मैं सुनता हूँ हरवक्त तेरी कहानी ।
कि तेरा जिकर हो रहा कूबकू है ॥

चमन में सरापा यह गाती है कुमारी।
तेरी ही फ़क़त रोशनी तू ही तूं है॥
बिना उसके माबूद औरों को बोलो।
जबांको सम्हालो यह क्या गुफ्तगू है॥
हरऐक गुलपै बुलबुल यह कहताहै खालिस।
जिधर देखता हूँ उधर तूंही तूं है॥

गान्धी सन्देश।

हमें गांधी संदेश सुनाया करो।
घरघर नरनारी चर्खे चलाया करो॥
खेतों में कपास बोवाने की जरूरत है अब।
करघा भी लाइये बुनने की जरूरत है अब॥
पिया खद्दरसे दिलको लगायाकरो।
हमें गान्धी सन्देश सुनाया करो॥
खद्दर की टोपियां कुर्ते बनवाइये बालम।
मेरे लिये भी खद्दर की साड़ी लाइये बालम॥
पिया खद्दरकी चद्दर मंगाया करो।
हमें गांधी सन्देस सुनाया करो॥

हिन्द में जब तीस कोटि चर्खें चले बालम ।
सिर पर हाथ धरके रोवे बिदेशी बालम ॥
फिर तो मौजकी बन्शी बजायाकरो ।
हमें गांधी सन्देश सुनाया करो ॥

गजल ।

भारतके वीरोंके तन में जोश अब होने लगे ।
देवता नेता बने राक्षस तो अब रोने लगे ॥
आजतक हमको सताया हाय परदेशीने आय ।
अब लिया औतार गांधी सुख तो अब होनेलगे ॥
हम रूइयां पैदा करैं सुख और देशों के करे ।
वस्त्र बिनु भारत मररहा शोक क्या होने लगे ॥
धूप जल बर्षा में दुख सह अन्न हम पैदा करैं ।
ढोढोके ले जाते बिदेशीं क्या चतुर होने लगे॥
हम मरैं भूखों कटावें मात गौ को नित्य ये ।
अब चलाका क्या करैंगे ज्ञान अब हो लगे ॥
भांग गांजा मद्यमें हम द्रव्य दे भिक्षुक हुए ।
हर तरह से लूट धन नृप नामवर होने लगे ॥

हर मुल्कका उस्ताद था यह देश भारतहीसदा ।
सो हम गुरु मुरख बने मूरख गुरु होने लगे ।
गऊ मातु हीसे दूध घी अन्न वस्त्र होता सदा ।
हाय बिन अपराध कुरबानीतो अब होने लगे ॥
क्योंन हो हिन्दू मुसलमा मिलके एक रायपर ।
गौ मातु रक्षाके लिये तइयार सब होने लगे ॥
जुल्म जालिमा बागका हरगिज न भूलूंगा कभी ।
अब तो गांधीकी कृपासे कर्म शुभ होने लगे ॥

॥ गजल ॥

भारत ! मैं तेरे नामका डंका बजाऊंगा ।
संसारका सिरमौर तुझे फिर बनाऊंगा ॥
रहने न दूगा मांकी गुलामी की बेड़िया ।
आजाद बनाऊंगा तभी चैन पाऊंगा ॥
जालिम पुलिसगर हमपै चलाएगी लाठिया ।
तो शौक से मैं सामने सीना अड़ाऊंगा ॥
हिंसाको स्वप्नमें भी न लाऊंगा हृदय में ।
खंजर से सितमगर के मैं बोटी कटाऊंगा ॥

बौछार गोलियोंकी या तेगोंकी मार हो ।
माताके लिये शीशमैं अपना चढ़ाऊंगा ॥
घर घरमैं चला चर्खा बना करके सूत को ।
लाखों करोड़ो थान में खादी बनाऊंगा ॥
कपड़े बिदेशी मुल्कमें बिकने न दूंगा मैं ।
खादीसे देश-भाइयों के तन सजाऊंगा ॥
गांजे, शराब ताड़ियोंकी जा दुकानों पर ।
कर जोड़ भाइयों से नशों को छुड़ाऊंगा ॥
अबतक जो लुटा मालोजर वह कमहै कुछ नहीं
लुटने न दूंगा देशकी दौलत बचाऊंगा ॥
ए "भीम" न कर सोच ये मोहननेकहाहै ।
"स्वाधीन मातृभूमि मैं अपनी बनाऊंगा" ॥

गांधी बाबा ।

गांधी बाबाने भारतजगाय दियाहै ।
हमें चरखेका मन्त्र बताय दियाहै ॥
शैर–जबसे घर२ में है चरखे ,काचलाना छूटा ।
बस उसी रोजसे भारत का नसीबा फूटा ॥

आके विदेशियों ने खूब खसोटा लूटा ।
छूटा धर्म इन्सान का सभी पौरुष टूटा ॥
महिमा सबको धरमका समुझा दिया है ।
गांधी बाबा ने भारत जगाय दिया है ॥
शैर–कौनसा घरथा जहां चरखे नहीं चलते थे ।
लाखो मन सूत इन्हीं चरखेसे निकलतेथे॥
मोटे और महीन कपड़े हर तरहके बनतेथे।
शुद्ध मजबूत थे सुखसे उन्हें पहनते थे ॥
आंख खुलती नहीं थी सुझाय दिया है ।
गांधी बाबा ने भारत जगाय दिया है ॥
शैर··ब्याह शादीमें था दहेजमें चरखेका चलन ।
नारियां हिन्दू मुसलमां समझती सगुन ॥
नेमसे नित्यवे चरखे को चलाती थी सदा।
अबके मानिन्द नहीं बैठ बिताती थी सदा॥
सुख से जीवन बिताना बताय दिया है ।
गांधी बाबाने भारत जगाय दिया है ॥

गाना।

शरण में आये हैं हम तुम्हारी दया करो हे दयालु भगवन। संम्हालो बिगड़ी दशा हमारी दया करो हे दयालु भगवन॥ न हम में बल है न हम में शक्ति न हम मे साधन न हममें भक्ति। तुम्हारे दरके हैं हम भिखारी दया करो हे दयालु भगवन॥ जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक। जो तुम हो ठाकुर तो हम हैं पुजारी दया करो हे दयालु भगवन॥ सुना है हम अन्श हैं तुम्हारे तुम्हीं हो सच्चे प्रभु हमारे। यह है तो सुधि तुमने क्यों बिसारी दया करो हे दयालु भगवन॥ भले जो हैं हम तो हैं तुम्हारे बुरे जो हैं हम तो हैं तुम्हारे तुम्हारे होकर रहे दुखारी दया करो हे दयालु भगवन॥ प्रदान कर दो महान् शक्ति भरो हमारे में ज्ञान भक्ति। तभी कहाओगे तापहारी

दया करो हे दयालु भगवन ॥ पुकार यह राधे श्यामकी हैं हमें तो टेक उस नाम की है। तुम्हारी तुम जाहो निर्विकारी दया करो हे दयाल भगवन ॥

गजल।

जो करतेहो मुझपर सितम देख लेना।
अलम का नतीजा अलम देख लेना ॥
लगे वा मुकबिल अगर गन मसीने।
अड़ा देगें छाती को हम देख लेना ॥
अजी भूमि भारत के खातिर मरेंगे।
हटेगा न पीछे कदम देख लेना ॥
रहे मांग स्वाधीनता का बराबर।
मेरे जबसे है दममें दम देख लेना ॥
ठनी जो है दिल में ठनेही रहेगी।
अगर जांय मुल्के अदम देख लेना ॥
अहिंसा न छोड़ेगें ऐ मारकंडे।
मुझेतो हैं गंगा कसम देख लेना ॥

गजल।

जिन्दगी देशकी सेवा में लगादूं भगवन्।
देश जाती के लिये खुदको मिटादूं भगवन्॥
डुब्बे बतनीका नशा मस्त बनादे ऐसा।
आपही आप में तन मन को भुलादूं भगवन्॥
राष्ट्र मन्दिर अगर भारत में बहाना चाहैं।
मिस्ल पानी के मैं निज खून बहादूं भगवन्॥
शान्ती चाहता हूँ चाहे मेरा शत्रू।
हो न खाना तो जिगर अपना हिलादूं भगवन्
देश जातीका बलिदानकी ख्वाहिशहो अगर।
सबसे पहिले मैं नाम अपना दिखादूं भगवन्॥

पुस्तक मिलने का पता—

प्रभुनारायन मिश्र बुकसेलर,

इस्टीशन रोड़, गया धाम।

"श्रीबागेश्वरी प्रेस" दारानगर, बनारस सिटी में मुद्रित।

सूचना ।

हमारे कार्य्यालय में हर एक शहरों की छपी पुस्तकें विक्रयार्थ प्रस्तुत रहती हैं व्यापारियों तथा ग्राहकोंको चाहिये कि माल मँगाते समय अपना पता साफ हिन्दी या अंग्रेजी में लिखें। थोक माल मँगाने वालों को स्टेशन का नाम अवश्य लिखना चाहिये जिस स्टेशन पर माल मंगाना हो,

अनाथ सुन्दरी	-)	सियापोश	।)
प्यारी सुन्दरी	-)	त्रिया चरित्र	≈)
आनन्द दिल मंजरी	-)	रामायण ८ काँड बड़ा	२)
भारत सुधार	-)	प्रेमसागर बड़ा सजिल्द	१॥)
चौथ चन्दा	-)	आल्हा ५२ लड़ाई	२)
गजल दिलचस्प	-)	आल्हा रामायण	॥≈)
सियाराम संकीर्तन	-)	नई कौवाली उर्दू में	-)
गुलेनार जोबन	-)	राजगृह माहात्म्य	-)
फोनोग्राफ का चाचा	-)	कौतुकरत्न भण्डागार	१॥)
मेला घुमनी रंगीन	-)	इन्द्रजाल ४ भाग	॥)
सती चरित्र	)॥	„ छोटा	≈)
„ संगीत में	≈)	सच्चा जादू	-)
पूरन मल ४ भाग	।॥)	गजल कौवाली	-)
राशिमाला	≡)	सीता हरण	-)
नवीन दुनियां	-)	अनूठा जोबन	-)

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

प्रभुनारायन मिश्र बुकसेलर,

इस्टेशन रोड (गया धाम)